।। साध्वीजी भावलक्ष्मी धुलबन्ध ।।

सं. मुनिसुजसचन्द्र-सुयशचन्द्रविजयौ

जिनशासननी उन्नति करवामां जेटलो सिंहफाळो पू. साधुभगवन्तोनो छे तेटलो ज सिंहफाळो पू. साध्वीजी भगवन्तोनो पण खरो. आ बाबतमां शंकाने कशे ज स्थान नथी. इतिहास पण आवा केटलाय द्रष्टान्तोनो साक्षी छे के अनेक विकट प्रसंगोमां सा. राजिमती, सा. रुद्रसोमा, सा. पोहिणी जेवा घणा साध्वीजी भगवन्तोए शासनने टकाववा/आगळ धपाववा माटे महेनत करी हती. प्रस्तुत कृतिमां पण कविश्री **मुकुन्दे** तेवा ज एक साध्वीजी श्री**भावलक्ष्मीजी**ना जीवनचरित्र पर प्रकाश पाड्यो छे.

साध्वीजीनो परिचय

साध्वीजी **भावलक्ष्मी**जी **सीधपुर** (सिद्धपुर ?) नामना नगरमां रहेता **साल्हओ** नामना व्यवहारीना पुत्री छे. तेमनी मातानुं नाम **झबकू** छे. ''वितपन नाम मरगदि सुन्दरी''आ पंक्ति परथी साध्वीजीनुं गृहस्थपणानुं नाम **वितपन** होय एवुं लागे छे. आवुं नाम कल्पवुं थोडुं कठिण छे, छतां ज्यां सुधी साध्वीजीना जीवनसम्बन्धि अन्य काव्य न मळे त्यां सुधी स्वीकारवुं पडशे. तेमनी दीक्षा कइ उमरे थइ ए अंगे कविए कशुंज लख्युं नथी, परंतु ''कालिक कुंयरि नइं सरसती ए'' आ पद द्वारा कविए भाइ (दीक्षानुं नाम तपासवा योग्य छे) अने बहेन (सा. भावलक्ष्मी) बन्नेनी दीक्षानी ओछा पण सुन्दर शब्दोमां नोंध करी छे. ''रतनचूला शिक्षणी'' आ पद द्वारा कविए साध्वीजी भगवन्तना गुरुणीना नामनो निर्देश कर्यो होय एम अमो मानीए छीए. साध्वीजी भगवन्तना शीयळादि गुणोनी पण कविए सुन्दर प्रशंसा करी छे. आ सिवाय तेमनो विशेष परिचय काव्यमां मळतो नथी

प्रस्तुत कृतिनी रचना वृद्धतपागच्छना **रत्नसिंहसूरि**ना शिष्य **उदयधर्म** उपाध्यायना शिष्य **मुकुन्द** कविए करी छे. काव्य ऐतिहासिक छे. कृति रचना कविए धवल नामना काव्यप्रकारमां करी छे. आ काव्यमां वपरायेला रगतहंसा (रक्तहंसा), मारूयणी धनासी (धन्यासी), धुल धनासी रागो विशेष नोंधपात्र छे.

प्रस्तुत कृतिनी प्रत सम्पादनार्थे आपवा बदल श्रीसाहित्यमन्दिरभण्डार (पालीताणा)ना व्यवस्थापकश्रीनो तेमज मुनिजयभद्रविजयजीनो आभार.

॥ अर्हं नमः ॥ ॥ ऐँ नमः ॥

॥ धुलबंध ॥ राग - रगतहंसा ॥

शासनदेवति[१] नमउं तुम्ह पाय, सरसति मझ मत्ति दिउ घणी ए,
हर ..... भास, आस पुरउ हईया[२] तणी ए १
हंसवाहिनि वर आपि अनोपम, ऊपम भगवति दिउं किसिउं[३] ए,
मूरख हूं पण भगति विशेषिहिं, **भावलक्ष्मी** गुण गाइसिउं ए २
.....वि, निरमली सहज सभावि,
आनन्दि पूरिउ आज, सारीउं मइं मझ काज,
सारीउं मइं मझ काज, भगवति नयणि दीठइं वासना[४],
दारिद्र चूरइ ऋद्धि पूरइ सखी, देव ३
नयर निरूपम **सीधपुर** जाणि, सरगजमलिं किरि तुडि[६] करइ ए,
दीसए गढ-मढ-पोलि[७]-पगार[८], सार सरसति नदी जिहां वसइ ए ४
मेरूसिहर सम पंच प्रासा[द], ... हइ ए,
प्राग्वंसि वसइ विव[हारीया] **साल्हओ** नामि, जाणि कि आणन्द अवतरिउ ए ५

त्रूटक

अवतरिउ किर[९] आणन्द श्रावक, महति[१०] मुहवडि[११] किज्ज,[१२]
तस घरणि **झबकू** ....., सुद्दढपणि सलहिज्ज[१३]ए,
तस ऊयरि उतपन अछइ, **वितपन** नाम मरगदि[१४] सुन्दरी,
जिण वचण जाणइ हियइ आणइ, जाणि कि ब्राह्मी सुन्दरी ६

॥ अथ राग-मारूयणीं धना[सी] ॥

उदार सुललित इम भणइ ए, सांभलु ए मुझ मन तणी वात,
तात माता प्रति प्रीछवइ ए, जाणीउ एउ अथिर संसार,
सार संजम अम्ह मनि वसउ ए ७
व्रत लयुं ए निज बान्धव साथि, साखि[१६] **श्रीरत्नसिंघसूरि** तणइ ए,
अवतरियां ए किरि बेउ इणि कालि, कालिक कुंयरि[१७] नइ सरसती ए ८

त्रूटक

सरसती किरि मुखि वसइ, अमिरत्तवाणि[१८] सोहामणी,
गणि **भावलक्ष्मी** नाभि भगवति, सती सयल सिरोमणी,
तपगच्छ सोह[१९] करइ मुहतर[२०], **रतनचूला** शिक्षणी,
सिद्धन्त[२१] वांचइ सुकृत सांचइ[२२], सारसीति[२३] सलक्षणी ९

॥ हिव राग धुल धनासी ॥

लक्षण–गुणमणिखाणि, जाण कि चन्दन[२४] अवतरी ए,
रूप सोभाग निधान, दरिसणि दुक्खि परिहरी ए १०

धन धन जननी कूख, दूखलिउं जीणं ऊपनां ए,
गछमाहि मेरू समान, ज्ञान चारित्रपात्र नींपनां ए ११

नीपनां चारित्रपात्र चतुर्विध संघ मन आनन्द ए,
प्रमाद टालइ पुण्य पालइ पापमूल निकंदए,
श्रीउदयधर्म उज्झांय सेवक इम **मुकुन्द** समुच्चरइ,
[२५]भलपणइं भगवति **भावलक्ष्मी** महिम[२६] महीयलि विस्तरइ १२

॥ इति धुल ॥छा॥ ग्रं. २९॥

शब्दकोश

१. शासनदेवति = शासनदेवता
२. हईया = हृदय
३. किसिउं = केवुं
४. वासना = ?
५. सरगजमलि = स्वर्गसमांन
६. तुडि = स्पर्धा, बरोबरी
७. पोलि = दरवाजो
८. पगार = किल्लो
९. किर = जाणे के
१०. महति = मोटा (?)
११. मुहवडि = आगळ पडता
१२. किज्ज = कार्य
१३. सलहिज्जए = वखाणवा
१४. मरगदि = मरकत रत्न जेवी,
१५. लयुं = लीधुं
१६. साखि = साक्षिए
१७. कुयरि = कुंवर
१८. अमिरत्तवाणि = अमृतवाणि
१९. सोह = शोभा
२०. मुहतर = महत्तरा
२१. सिद्धन्त = सिद्धान्त
२२. सांचइ = एकठुं करे छे.
२३. सारसीति = ? सरस्वति
२४. चन्दन = चन्दनबाळा
२५. भलपणइं = श्रेष्ठपणामां
२६. महिम = महिमा, महात्म्य